**PAPER-III**

**HINDI**

**Signature and Name of Invigilator**

1. (Signature) __________________________

   (Name) ____________________________

2. (Signature) __________________________

   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________

(In words)

| D | 2 | 0 | 1 | 1 |
|---|---|---|---|---|

Time : 2 $^{1}/_{2}$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

## Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   **No Additional Sheets are to be used.**
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

## परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   **इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।**
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

## HINDI
## हिन्दी

## PAPER – III
## प्रश्नपत्र – III

**नोट :** यह प्रश्नपत्र **दो सौ** (200) अंकों का है एवं इसमें **चार** (4) खण्ड हैं । अभ्यर्थी इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार दें ।

## खण्ड – I

**नोट :** इस खण्ड में **बीस-बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ** (500) शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. तुलसी के सामाजिक-पारिवारिक आदर्श ।

**अथवा**

कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ ।

2. हिन्दी उपन्यास और स्वाधीनता आन्दोलन ।

**अथवा**

कॉलरिज का कल्पना सिद्धान्त ।

## खण्ड – II

**नोट :** इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

### ऐच्छिक इकाई – I (भक्ति काव्य)

3. निर्गुण और सगुण भक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए ।

4. कबीर के कवि रूप की चर्चा कीजिए ।

5. सूर के वियोग शृंगार पर प्रकाश डालिए ।

### ऐच्छिक इकाई – II (छायावाद)

3. छायावाद की काव्य भाषा की समीक्षा कीजिए ।

4. महादेवी के काव्य में व्यक्त रहस्यानुभूति की विवेचना कीजिए ।

5. कामायनी के 'रूपक तत्त्व' का निरूपण कीजिए ।

### ऐच्छिक इकाई – III (कथा साहित्य)

3. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में दलित विमर्श के स्वरूप की चर्चा कीजिए ।

4. 'गोदान भारतीय कृषक की संघर्ष जीवन गाथा का जीवन्त दस्तावेज़ है ।' इस कथन के आलोक में 'गोदान' की समीक्षा कीजिए ।

5. समकालीन हिन्दी कहानी के युगबोध का विवेचन कीजिए ।

### ऐच्छिक इकाई – IV (काव्यशास्त्र और आलोचना)

3. सहृदय की अवधारणा पर विचार कीजिए ।

4. अरस्तू के विरेचन सिद्धान्त का प्रतिपादन कीजिए ।

5. रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि को समझाइए ।

## खण्ड – III

**नोट :** इस खण्ड में **दस-दस** (10-10) अंकों के **नौ** (9) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास** (50) शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ बताइए ।

7. सिद्ध कीजिए कि 'घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं ।'

8. महादेवी की प्रतीक योजना को स्पष्ट कीजिए ।

9. नागार्जुन की लोक-दृष्टि का विवेचन कीजिए ।

10. कहानी और नई कहानी का अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

11. 'अन्धेर नगरी' की प्रासंगिकता समझाइए ।

12. ‘औचित्य’ का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

13. रामचन्द्र शुक्ल की निबन्धगत विशेषताएँ बताइए ।

14. क्रोचे के 'अभिव्यंजनावाद' की चर्चा कीजिए ।

## खण्ड – IV

**नोट :** इस खण्ड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है । समाजशास्त्र के पश्चिमी ग्रंथकार कहा करें कि समाज में एक दूसरे की सहायता अपनी-अपनी रक्षा के विचार से की जाती है; यदि ध्यान से देखा जाय तो कर्म-क्षेत्र में परस्पर सहायता की सच्ची उत्तेजना देनेवाली किसी न किसी रूप में करुणा ही दिखाई देगी । मेरा

यह कहना नहीं कि परस्पर की सहायता का परिणाम प्रत्येक का कल्याण नहीं है । मेरे कहने का अभिप्राय है कि संसार में एक-दूसरे की सहायता विवेचना द्वारा निश्चित इस प्रकार के दूरस्थ परिणाम पर दृष्टि रखकर नहीं की जाती, बल्कि मन को स्वत: प्रवृत्त करने वाली प्रेरणा से की जाती है । दूसरे की सहायता करने से अपनी रक्षा की भी सम्भावना है, इस बात का उद्देश्य या ध्यान प्रत्येक, विशेषकर सच्चे सहायक को तो नहीं रहता । ऐसे विस्तृत उद्देश्यों का ध्यान तो विश्वात्मा स्वयं रखती है; वह उसे प्राणियों की बुद्धि ऐसी चंचल और मुण्डे-मुण्डे भिन्न वस्तु के भरोसे नहीं छोड़ती । किसी युग में और किस प्रकार मनुष्यों ने समाज-रक्षा के लिए एक दूसरे की सहायता करने की गोष्ठी की होगी, यह समाजशास्त्र के बहुत से वक्ता लोग ही जानते होंगे । यदि परस्पर सहायता की प्रवृत्ति पुरखों की उस पुरानी पंचायत ही के कारण होती और यदि उसका उद्देश्य वहीं तक होता जहाँ तक समाजशास्त्र के वक्ता बतलाते हैं, तो हमारी दया मोटे, मुसंडे और समर्थ लोगों पर जितनी होती उतनी दीन, अशक्त और अपाहिज लोगों पर नहीं, जिनसे समाज को उतना लाभ नहीं । पर इसका बिल्कुल उल्टा देखने में आता है । दु:खी व्यक्ति जितना ही असहाय और असमर्थ होगा उतना ही अधिक उसके प्रति हमारी करुणा होगी । एक अनाथ अबला को मार खाते देख हमें जितनी करुणा होगी उतनी एक सिपाही या पहलवान को पिटते देख नहीं । इससे स्पष्ट है कि परस्पर सहाय के जो व्यापक उद्देश्य हैं उनको धारण करने वाला मनुष्य का छोटा-सा अन्त:करण नहीं, विश्वात्मा है ।

15. पश्चिमी विचारकों की करुणा सम्बन्धी मान्यता क्या है ?

16. सच्चा सहायक किस भाव से करुणा में प्रवृत्त होता है ?

17. ‘किसी अनाथ अबला को मार खाते देख हमें जितनी करुणा होगी उतनी एक सिपाही या पहलवान को पिटते देख नहीं होगी’ – क्यों ?

18. करुणा के व्यापक उद्देश्य को विश्वात्मा क्यों धारण करता है ?

19. सामाजिक जीवन की स्थिति एवं पुष्टि के लिए करुणा क्यों जरूरी है ?

**Space For Rough Work**

| FOR OFFICE USE ONLY | |
|---|---|
| Marks Obtained | |
| Question Number | Marks Obtained |
| 1 | |
| 2 | |
| 3 | |
| 4 | |
| 5 | |
| 6 | |
| 7 | |
| 8 | |
| 9 | |
| 10 | |
| 11 | |
| 12 | |
| 13 | |
| 14 | |
| 15 | |
| 16 | |
| 17 | |
| 18 | |
| 19 | |

Total Marks Obtained (in words) ..........................................

(in figures) ........................................

Signature & Name of the Coordinator ..................................

(Evaluation) Date .........................